श्री व्यंकटेशावरील पदें

पाहि पाहि मला श्री व्यंकटा ।।ध्रु.।। मस्तकिं मुगुट कानी कुंडल

(राग: यमन कल्याण - ताल: दीपचंदी)

आलिया। वारिसि दुर्धर संकटा।।३।।

पद ४०

झळके। पीतांबर शोभत की कटा।।१।। दीनदयाळ प्रभु भक्ताचें

कारण। उभा असे पुष्करणी तटा।।२।। माणिक म्हणे तुज शरण